n the past. However, on analysis it was found that the samples seized did not contain uranium. On 12th October, 1994, it was earnt from the SIB (Subsidiary Intelligence Bureau), Shillong, that 4 persons were caught with 2.5 Kg. of suspected radioactive material. On an analysis of a sample of the material, it was found to be sodium-di-uranate, also known as yellow cake.

(c) Security arrangements have been stepped up in the operational areas following the report of this incident.

(d) None of the persons arrested in the bove incident belong to Bangladesh.

निर्माणाधीन परमाणु विद्युत परियोजनाएं

2487. **श्रीमती सुष्मा स्वराज :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह बात सच है कि देश में कई परमाणु ऊर्जा परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं ;

(ख) यदि हां, तो इन परियोजनाओं के नाम क्या-क्या हैं और उनकी उत्पादन क्षमता कितनी है तथा इन परियोजनाओं द्वारा कब तक उत्पादन आरम्भ करने के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया है ;

(ग) क्या यह भी सच है कि उक्त परियोजनाओं के नियत समय में पूरा होने में विलम्ब हुआ है ; और

(घ) यदि हां, तो किन-किन परियोजनाओं का निर्माण-कार्य नियत समय से पीछे चल रहा है और प्रत्येक परियोजना में कितना विलम्ब हुआ है तथा निर्माण-कार्य में विलम्ब होने के कारण उनकी निर्माण-लागत में कितने प्रतिशत वृद्धि हुई है ?

प्रधान मंत्री के कार्यालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी : (क) और (ख) इस समय निर्माणाधीन परमाणु विद्युत परियोजनाएं निम्नानुसार हैं :

परियोजना का नाम	उत्पादन क्षमता (मेगावाट)	क्रांतिकता प्राप्त करने की प्रत्याशित तारीख
1. ककरापार (के०ए०पी०पी०) यूनिट-2	230 मेगावाट	दिसम्बर, 1994
2 कैगा यूनिट 1 तथा 2	(2×220 मेगावाट)	जून, 1996 (1) मई, 1996 (2)
3. राजस्थान यूनिट 3 तथा 4	(2×220 मेगावाट)	नवम्बर, 1996 (3) मई, 1997 (4)

इसके बाद, यह आशा की जाती है कि इन यूनिटों को क्रांतिकता प्राप्त करने की तारीख से छः महीनों के भीतर ग्रिड से जोड़ दिया जायेगा और इनमें वाणिज्यिक स्तर पर उत्पादन होना शुरू हो जाएगा ।

(ग) और (घ) इस संबंध में ब्यौरा नीचे दी गई सारणी में दिए गए हैं । परियोजना के संबंध में जिन मूल लागत अनुमानों यूनिटों के लिए हैं और क्रांतिकता प्राप्त करने संबंधी कार्यक्रम पहले एक यूनिट और बाद में दूसरे यूनिट के लिए दिया गया है । इन परियोजनाओं के मूल लागत अनुमानों में निर्माण के दौरान लगने वाले ब्याज (आई डी सी) के तत्व को शामिल नहीं किया गया था । सही रूप से यह बताना कठिन है कि निर्माण-कार्य में विलम्ब होने की वजह से प्रत्यक्षतः इस परियोजना के निर्माण पर आने वाली लागत में कितने प्रतिशत वृद्धि होगी ।

परियोजना	क्रांतिकता प्राप्त करने संबंधी कार्यक्रम		लागत अनुमान	
	मूल	वास्तविक। प्रत्याशित	मूल	प्रत्याशित (करोड़ रुपए)
ककरापार-1 तथा 2	दिसम्बर, 90 दिसम्बर 91	सितम्बर 92 दिसम्बर 94	382.50	1025+ (आई डी सी) 310
	(मूल संस्वीकृति जुलाई, 1981 में प्राप्त हुई)			
कैगा-1 तथा 2	जून, 95 दिसम्बर, 95	जून, 96 दिसम्बर, 96	730.72	1590+ (आई डी सी) 685
	(मूल संस्वीकृति जून, 1987 में प्राप्त हुई)			
राजस्थान-3 तथा 4	मई, 95 नवम्बर, 95	नवम्बर, 96 मई, 97	711.57	1450+ (आई डी सी) 657
	(मूल संस्वीकृति नवम्बर, 1986 में प्राप्त हुई)			

इन परियोजनाओं के लागत अनुमानों में सामान्य रूप से जो वृद्धि हुई है वह निर्माण के दौरान लगने वाले ब्याज को शामिल करने के अलावा परियोजना के कार्य क्षेत्र में वृद्धि होने, मूल्यों में वृद्धि होने, विदेशी मुद्रा की विनिमय दर में विभिन्नता होने, रूपए का अवमूल्यन होने, करों और शुल्कों आदि में परिवर्तन होने की वजह से भी हुई है।

ककरापार-1 में विलम्ब नरोरा के भूकम्पनीय डिजायन के अनुरूप ककरापार परियोजना के डिजायन में संशोधन करने, थ्री माइल आइलैंड (टी एम आई) के अनुभव के आधार पर की गई सिफारिशों को कार्यान्वित करने, यूनिट में आग लगने की स्थानीय घटना होने, पाइपिंग हार्डवेयर की आपूर्ति में देरी होने, पाइपों को लगाने के लिए ठेका देने, यंत्रीकरण और नियंत्रण मदों की आपूर्ति में विलम्ब होने की वजह से हुआ था। ककरापार-2 को निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार यूनिट-1 के पूरा होने के 1 वर्ष के बाद पूरा किया जाना था। इसके अतिरिक्त, ककरापार-2 को चालू करने में हुई देरी का कारण यह था कि इससे पहले के यूनिटों को परिचालित करने से प्राप्त अनुभव के आधार पर सुरक्षा संबंधी आवश्यक अभियांत्रिकी परिवर्तन करने पड़े जिनके परिणामस्वरूप कार्य क्षेत्र में वृद्धि हुई और यह काम और जटिल हो गया। कैगा 1 तथा 2 और राजस्थान 3 तथा 4 के मामले में निर्धारित से अधिक समय लगने का कारण सुरक्षा संबंधी नई अपेक्षाओं से उत्पन्न सिविल इंजीनियरी डिजायन की विस्तृत रूप से पुनरीक्षा करने की जरूरत की वजह से सिविल कार्यों में प्रारम्भिक रूप से विलम्ब होना था। राजस्थान परवाणु विद्युत परियोजना 3 तथा 4 के मामले में मुख्य संयंत्र के लिए सिविल कार्यों को करने के वास्ते ठेकेदार के लिए निर्धारित की गई धनराशी को प्राप्त करने में पेश आने वाली कठिनाई एक अतिरिक्त कारक था।

मध्य प्रदेश में यूरेनियम की खोज

2588. **श्री शिव प्रसाद धनपुरिया :** क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या मध्य प्रदेश में मंडला और बालाघाट के सीधे क्षेत्र के 30 वर्ग किलोमीटर में यूरेनियम के भंडार की खोज की गई है;

(ख) यदि हां, तो प्राप्त यूरेनियम कहां परिष्कृत किया जा रहा है और यहां से कितना यूरेनियम प्राप्त किया गया तथा कितना परिष्कृत किया गया; और

(ग) क्या सरकार का बाह्य आक्रमण से सुरक्षित मध्य प्रदेश में किसी स्थल पर परिष्कृत यूरेनियम के संचय हेतु एक केन्द्र को स्थापित करने का विचार है?

प्रधान मंत्री के कार्यालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी) : (क) परमाणु ऊर्जा विभाग